Murre & Parker

Page 1.

Book. 1

Preeti Jain

Chapter - 4.
Credibility विश्वसनीयता

x—x—x—x—x—x—x

परिचय :-

हम आए दिन देखते हैं कि व्यक्ति कभी पैसों से संबंधित मामलों में धोखा खा रहा है कहीं प्रोपर्टी में, कहीं प्यार में। आजकल इन धोखाधड़ी के मामलों में तकनीक का भरपूर गलत उपयोग किया जा रहा है। लोगों को झूठे ई-मेल, मैसेज भेज कर फंसाया जाता है, लोग भी लुभावने वादों के फेर में आ जाते हैं, तो एक तार्किक व्यक्ति को अपनी आलोचनात्मक शक्ति व सूझबूझ का प्रयोग करना चाहिए। यह निर्धारित करना बहुत जरूरी है कि किए गए दावों में कितनी सच्चाई है और साथ ही क्या दावा करने वाला विश्वसनीय है या नहीं।

इस तरह किसी भी मामले की विश्वसनीयता पर संदेह करने के दो आधार हैं :-

(i) दावा (ii) दावे का स्रोत

⇒ **विश्वसनीयता के दो आधार :-**

(i) दावा
(ii) दावे का स्रोत

darshanmitra.school.blog

मान लीजिए आपको सीटी बैंक से मेल आता है जिसमें आपके बैंक अकाउंट में कुछ दिक्कत होने की बात कही जाती है और आपको निर्देश दिया जाता है कि उनके द्वारा भेजे गए लिंक पर अपनी जानकारी देकर आने वाली दिक्कतों से बचा जा सकता है। आप हड़बड़ाहट में लिंक पर जाते हैं और देखते हैं कि वह बैंक की वेबसाइड का पेज है तब आश्वस्त होकर अपनी सभी जानकारी वहां भर देते हैं। कुछ देर में आप देखते हैं कि आपके मोबाइल पर फ्रिज, A.C, टी.वी, आपके अकाउंट से खरीदने का मैसेज आता है जोकि आपने खरीदे ही नहीं हैं, इस तरह आप धोखाधड़ी का शिकार हो गए।

यहाँ पर ध्यान देने वाली बात यह थी कि क्या किया गया दावा व दावे का स्रोत विश्वसनीय है या नहीं है। कभी भी कोई बैंक इस तरह की जानकारी ई-मेल द्वारा नहीं देती और न ही बैंक ये सारी जानकारी मांगता है।

किए गए दावों की विश्वसनीयता के अलग-अलग स्तर होते हैं। कई बार दावा सिरे से खारिज किया जा सकता है और कई बार बिना किसी संदेह के स्वीकृति देने योग्य

darshanmitra.school.blog

लगता है, पर कई मामलों में पता चलता है कि जिस दावे को हम सिरे से नकारते थे वह सही मिलता है और जिसे स्वीकार कर रहे थे वह गलत निकला तो हमारे लिए उन आधारों को जानना बहुत जरूरी है जिनकी वजह से कोई भी दावा या दावे का स्रोत अपनी विश्वसनीयता खो देता है।

दावों की विश्वसनीयता :-

सामान्य तौर पर कोई भी दावा तब विश्वसनीय नहीं लगता है जब उसका हमारे अनुभव, पूर्व जानकारी या दूसरे विश्वसनीय दावों के साथ विरोधाभास नजर आता है।

अब हम ऊपर दी गई परिभाषा के अनुसार दावे कब-कब अपनी विश्वसनीयता खो देते हैं उन आधारों की विस्तृत चर्चा करेंगे :-

(1) दावों और व्यक्तिगत अनुभव में विरोधाभास :-

हमारे अपने प्रत्यक्ष अनुभव संसार के बारे में जानकारी प्राप्त करने की सबसे अधिक विश्वसनीय स्रोत हैं, अगर कोई बात जो हमने देखा है उसके उलट में कही जाए तो वह निश्चित तौर पर संदेह करने योग्य है, लेखक एक उदाहरण द्वारा इस बात को स्पष्ट करते हैं, वे कहते हैं :-

darshanmitra.school.blog

कि उनका दोस्त मार्क्यूस उनका (मूर) और पर्किर कॉमन फ्रैंड है, मूर को उनका दोस्त पर्किर बताता है कि उसने सुना है कि मार्क्यूस ने चमकीले नीले रंग की एक मिनीकूपर कंपनी की छोटी कार खरीदी है, अब यह दावा मूर को सही नहीं लगता क्योंकि वह सुबह ही उस दोस्त के घर गए थे जहाँ उन्होने महरून रंग की कार खड़ी देखी थी, तो यहाँ पर दावा उनके प्रत्यक्ष अनुभव के विरोध में था।

परन्तु कई बार अनुभव और स्मृति भी गड़बड़ा जाती है, इनके पीछे के कारणों को लिखते हुए लेखक कहते हैं कि यह गलती कई कारणों से हो सकती है :-

(i) भौतिक तथा वातावरण संबंधी कारण जैसे रोशनी न होना, शोर-शराबा होना, घटना का बहुत तेजी से बदलना कुछ मामलों में यन्त्रों / उपकरणों का सही मापदंड न देना।

(ii) व्यक्तिगत विभिन्नताएँ में यह नहीं भूलना चाहिए कि सभी व्यक्ति समान नहीं होते हैं, किसी की अन्वेक्षण क्षमता, स्मृति शक्ति तेज होती है और किसी की कम।

(iii) धारणाएँ, विश्वास, डर, उम्मीदें भी व्यक्ति के अनुभवों को प्रभावित करती हैं, विशफूल थिंकींग [Wishfull thinking]

darshanmitra.school.blog